कुरुक्षेत्र

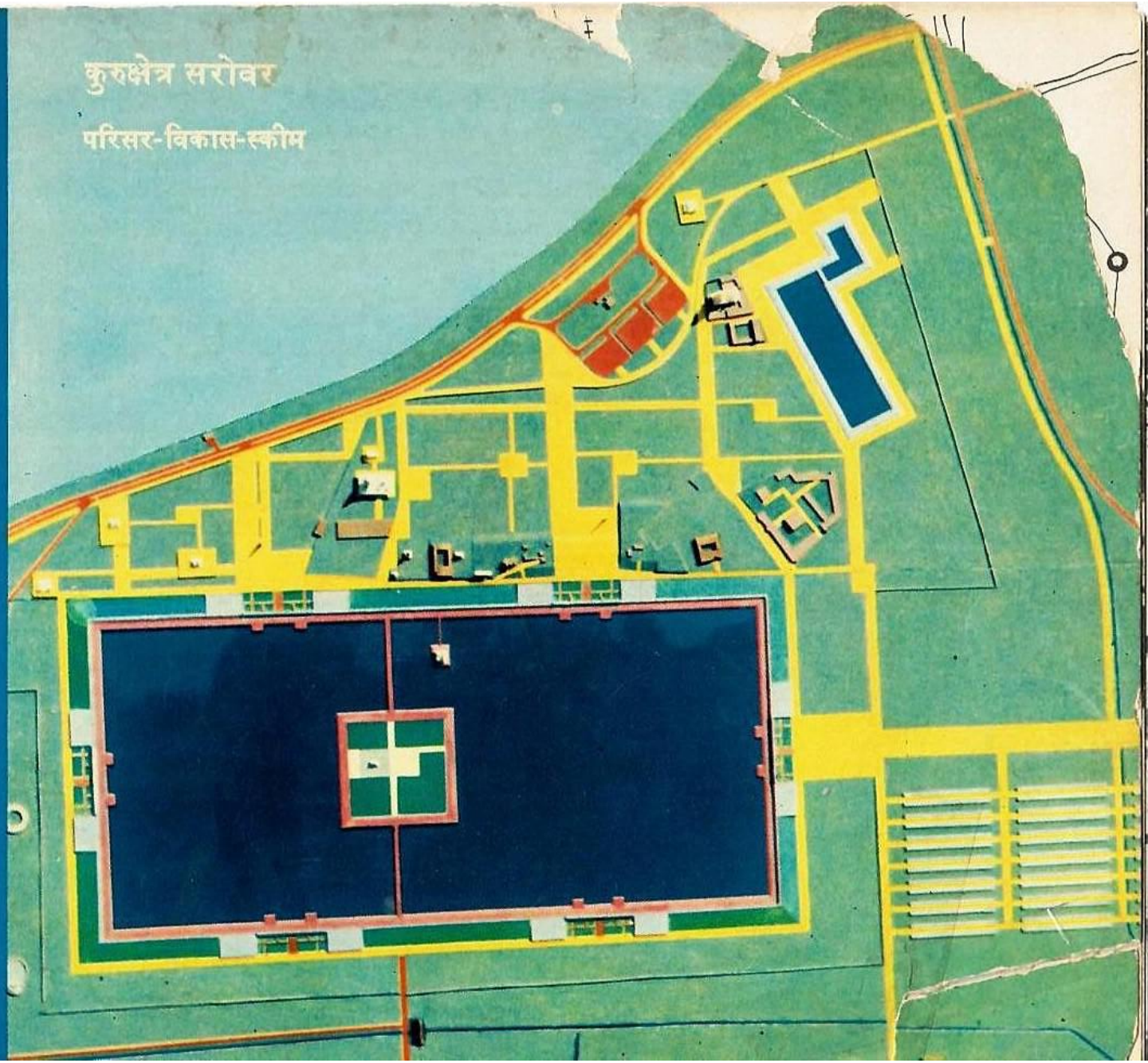

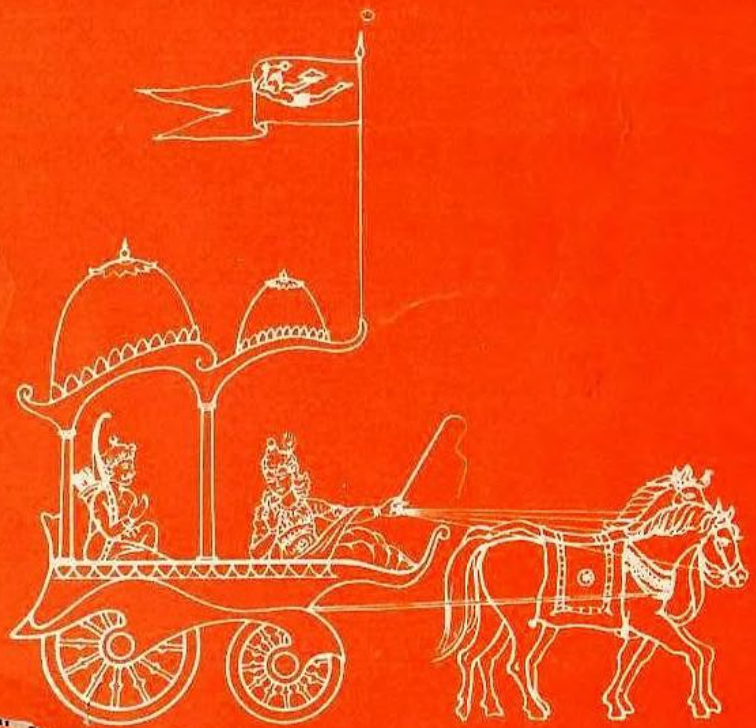

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥

सब धर्मों का परित्याग करके मुझ एक की शरण में आ जा। मैं तुझे सारे पापों से छुड़ा दूँगा। शोक मत कर।

(गीता १८–६६

देवभूमि कुरुक्षेत्र

कुरुक्षेत्र गीता की पवित्र भूमि है। यह दिल्ली के उत्तर में स्थित है। यह एक विशाल क्षेत्र है जोकि ४८ कोस अथवा लगभग १०० मील में फैला हुआ है। यहाँ बहुत-से अत्यन्त प्राचीन तथा परम्परागत मन्दिर और सरोवर स्थित हैं। श्रीमद्भगवद्गीता के पहले ही श्लोक में कुरुक्षेत्र को 'धर्मक्षेत्र' कहा गया है।

४८ कोस के क्षेत्र में स्थाण्वीश्वर अथवा थानेसर, पृथूदक अथवा पिहोवा, कपिस्थल अथवा कैथल, फल्गु फराल, पुण्डरीक अथवा पुण्डरी, रामह्रद (रामराय), पिण्डतारक अथवा पिण्डारा, सर्पदेवी अथवा सफीदों जैसे तीर्थ-स्थान सम्मिलित हैं। ३६० तीर्थ-स्थानों में से पिहोवा, कैथल, पुण्डरी, सफीदों तथा जीन्द में लगभग १०० तीर्थ-स्थानों की आसानी से यात्रा की जा सकती है। इनमें से कुछ तीर्थ-स्थान तो जीर्णावस्था में हैं और कुछ एक समय के परिवर्तनों से बिल्कुल ही लुप्त हो चुके हैं।

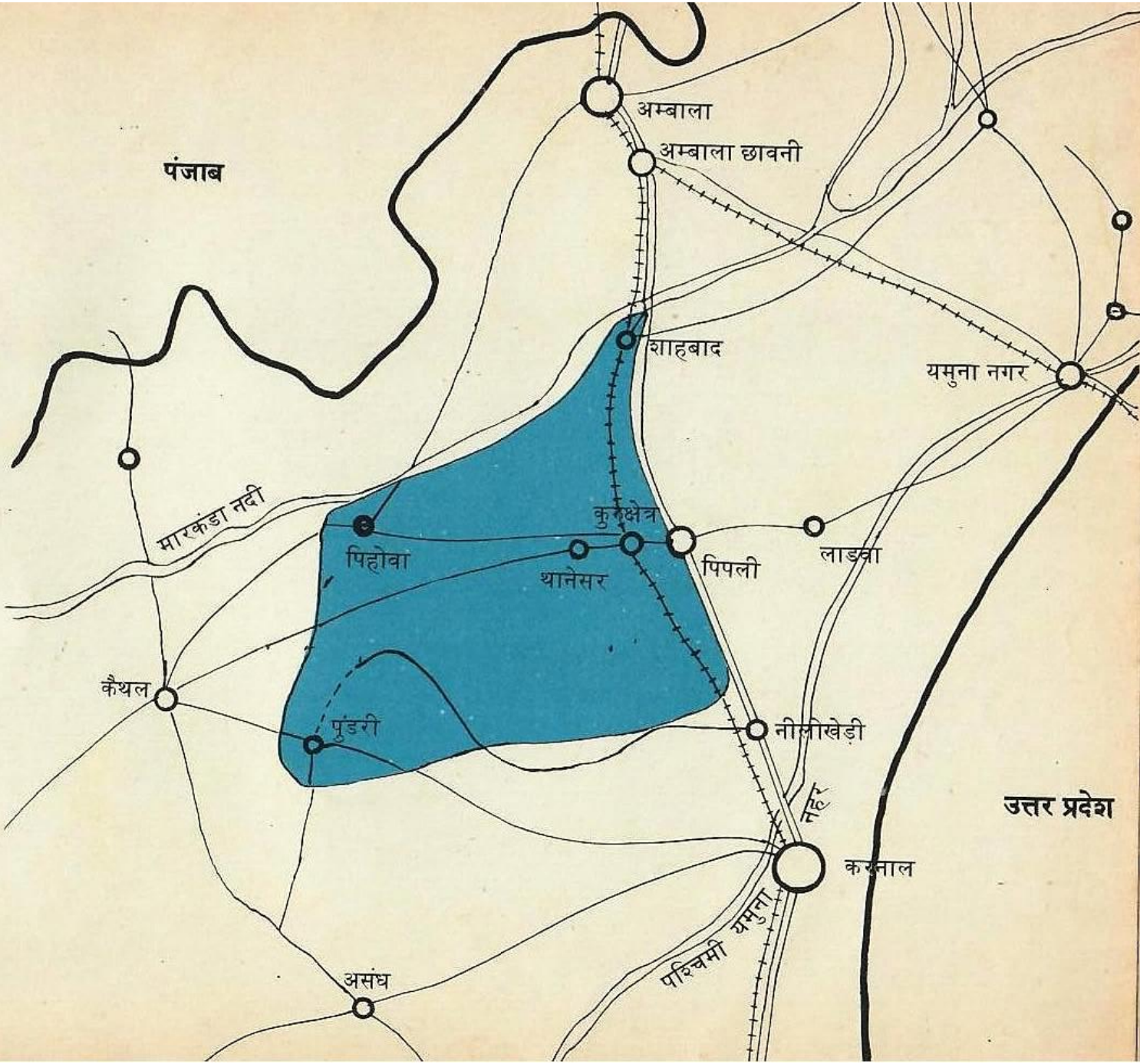

कुरुक्षेत्र का इलाका

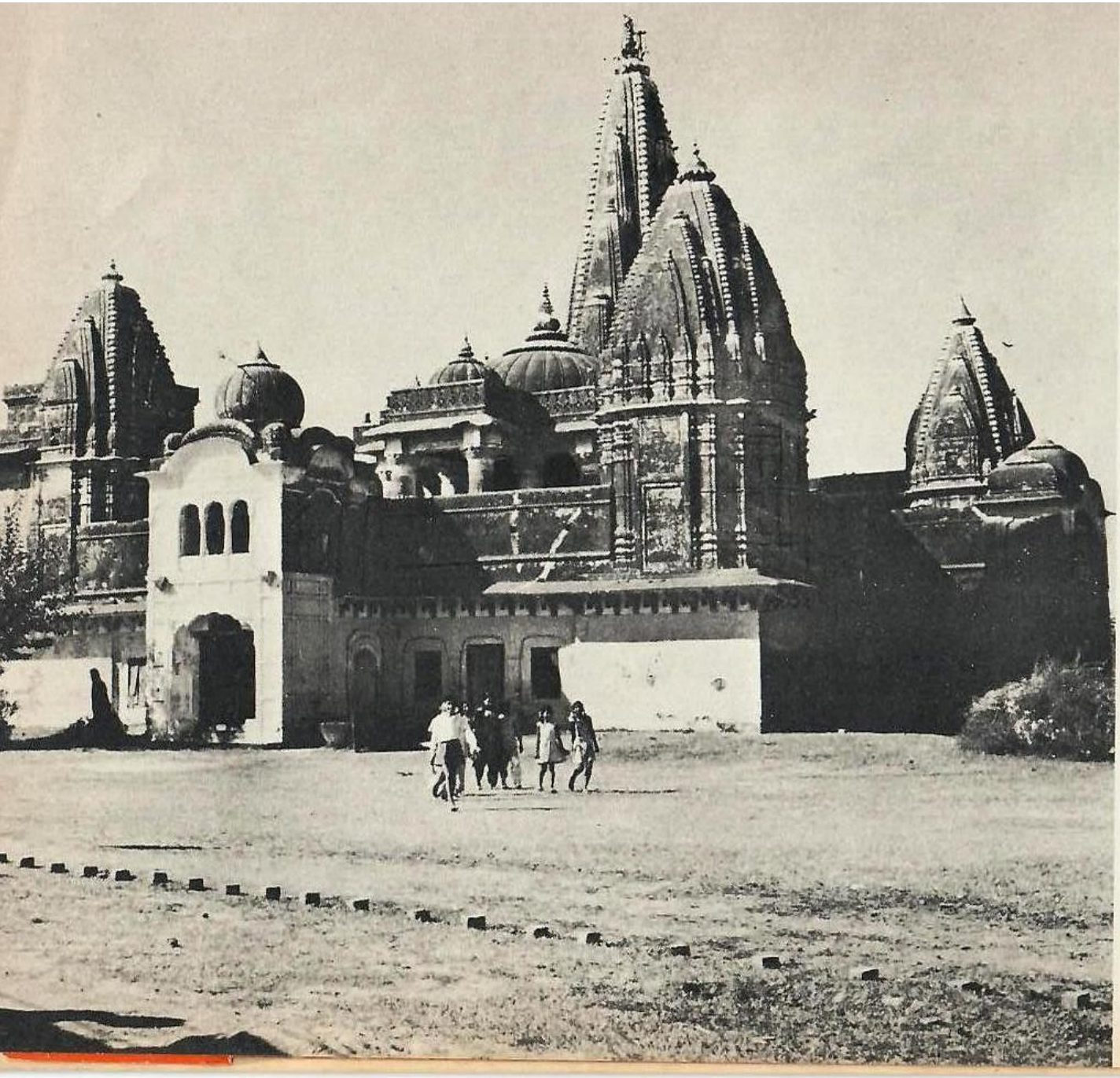

पंजाब गज़ेटियर अम्बाला डिवीज़न (१८८३–८४) के अनुसार इसकी सम्भावित सीमा सरस्वती के पश्चिम की ओर रत्नयक्ष से पिहोवा तक; पिहोवा से दक्षिण की ओर पुण्डरी तक; उससे पूर्व की ओर नारायणा तक और नारायणा से उत्तर की ओर रत्नयक्ष तक आंकी गई है। (चित्र पृष्ठ १ पर)

कुरुक्षेत्र, जिसे परम्परागत रूप से भारतीय विचार-धारा की जन्मभूमि माना जाता है, किसी समय आर्य संस्कृति का सबसे महत्वपूर्ण केन्द्र था। यह माना जाता है कि इसी स्थान पर हिन्दू समाज और धर्म ने अपना वास्तविक स्वरूप धारण किया। महान नदी सरस्वती सदा इसी क्षेत्र में बहा करती थी। इसी नदी के तट पर ही महर्षि व्यास जी ने अमर महाकाव्य महाभारत की रचना की। महान वेदों, उपनिषदों तथा पुराणों की रचना भी इसी भूमि में हुई। यहीं पर पाण्डवों तथा कौरवों के बीच धर्म-युद्ध हुआ और भगवान कृष्ण ने अर्जुन को प्रेरणा देने के लिये गीता का उपदेश दिया। निःसन्देह इस तीर्थ को भारत के तीर्थ-स्थानों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण एवं श्रद्धा का स्थान प्राप्त है।

शिवमन्दिर पिहोवा

कुरुक्षेत्र का नाम सम्राट कुरु के नाम पर पड़ा है। वे कौरवों तथा पाण्डवों के धर्मात्मा पूर्वज थे जिनके बीच महाभारत का युद्ध हुआ। इसे 'दैवासुर' संग्राम माना जाता है जिसमें पाण्डव विजयी हुये। कठिन तपस्या करने के बाद कुरु को वरदान मिला जिसके कारण कुरुक्षेत्र पवित्र स्थान बना। जिन लोगों की मृत्यु यहाँ हुई, वे पापमुक्त होकर स्वर्ग सिधारे।

उत्तर-पश्चिम से विदेशी आक्रमणकारियों के लगातार हमलों के कारण इसकी गौरवपूर्ण सभ्यता का विनाश हुआ परन्तु इसके बावजूद कुरुक्षेत्र अमर रहा है और इस के नाम को वही महत्व और सम्मान प्राप्त है जो समग्र देश के घर-घर में हिन्दू देवी-देवताओं को प्राप्त है। विशाल ऐतिहासिक नगर स्थाण्वीश्वर के ध्वंसावशेषों के पवित्र स्थल पर अब एक छोटा-सा नगर थानेसर बसा हुआ है। इसमें सभी युगों से देश के कोने-कोने से सारा वर्ष, विशेषकर कुछ वर्षों के बाद सूर्य-ग्रहण के मेले के अवसर पर, बड़ी संख्या में तीर्थ यात्री आते रहे हैं।

पुंडरी

स्वर्ण युग

बाद के युगों में, कुरुक्षेत्र और इसका स्थानेश्वर नगर (थानेसर) फलता-फूलता रहा और गौरव तथा ख्याति प्राप्त करता रहा। यह विद्या तथा संस्कृति का एक बड़ा केन्द्र था और इसका विश्वविद्यालय एक हज़ार मील से भी अधिक अन्तर पर बसे आर्यावर्त के पूर्वी क्षेत्रों में स्थित नालन्दा से अधिक विस्तृत तथा बड़ा था। सातवीं शताब्दी में राज्य करने वाले सम्राट हर्ष ने स्थाण्वीश्वर को अपने साम्राज्य के पश्चिमी प्रान्तों की राजधानी बनाया और यह संस्कृत शिक्षा, साहित्य एवं दर्शन का केन्द्र बना जिससे कुछ हद तक संयुक्त भारत बनाने का उसका स्वप्न साकार हुआ।

ईसवी सन् ६२९ से ६४५ के बीच भारत में आनेवाले चीनी यात्री ह्यूनसांग के यात्रा-विवरण में हमें हर्ष के राज्य की समृद्धि का स्पष्ट ब्यौरा प्राप्त होता है।

सर्पदमन तीर्थ, सफीदों

यहाँ कलाओं का विकास हुआ जिसका प्रमाण, अभिलेखों के अतिरिक्त, समय-समय पर की गई खुदाइयों से मिलता है। पत्थर के मन्दिरों तथा स्थानों के खँडहर, जो कि सरस्वती तथा घग्गर के किनारे के गाँवों में मिलते हैं, इस प्रदेश की शक्ति, समृद्धि तथा सम्पत्ति के सूचक हैं। कुरुक्षेत्र की पवित्रता अनेक गुरुद्वारों द्वारा और भी बढ़ गई है जोकि इस स्थान पर यात्रा करनेवाले सिख गुरुओं की याद में बनाये गये थे। सिख धर्म के प्रवर्तक गुरु नानक तथा छठे, नवें तथा दसवें गुरु—गुरु हर गोबिन्द, गुरु तेग बहादुर तथा गुरु गोबिन्द सिंह, दीन-हीन जनता को सत्य-मार्ग दिखाने के लिए कुरुक्षेत्र में पधारे थे।

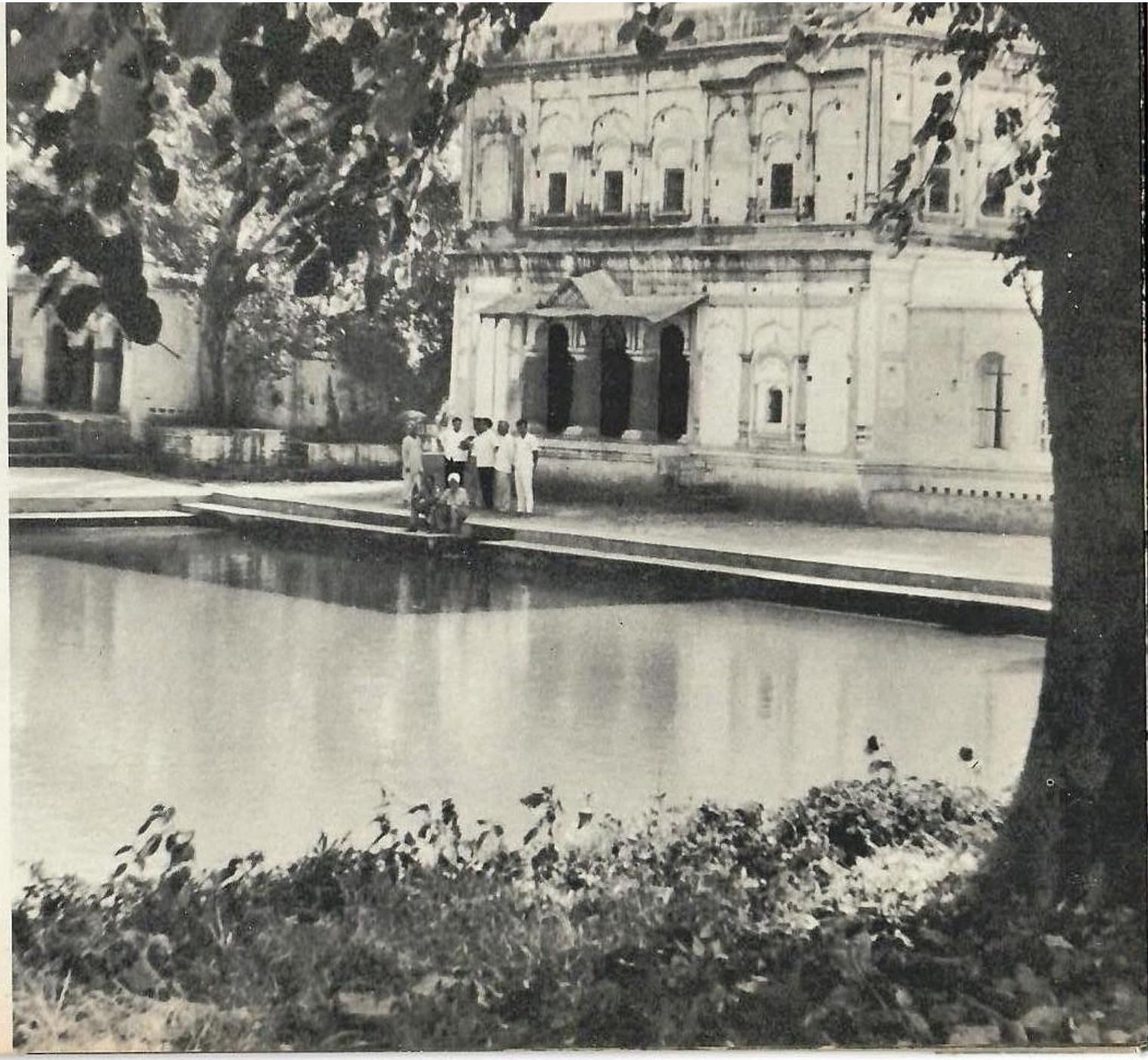

स्थानेश्वर महादेव, थानेसर

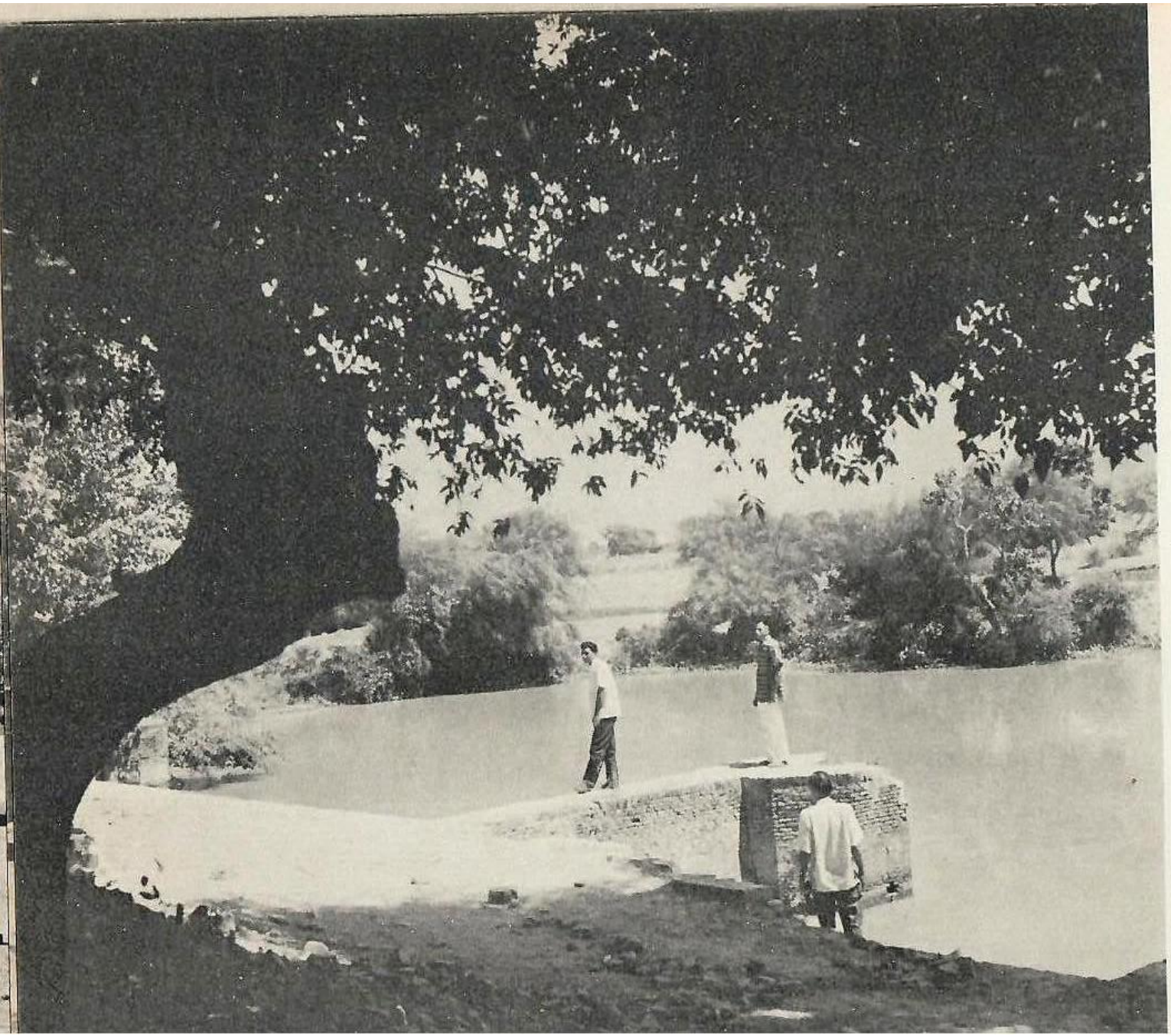

मध्ययुगीन समय

यह स्थान दिल्ली को जानेवाले मार्ग पर स्थित है। इस स्थान पर यात्री, तीर्थ यात्री, लुटेरे तथा विजेता भी आये हैं। इसकी सम्पत्ति तथा धार्मिक महत्त्व के कारण उत्तर-पश्चिमी सीमाओं से आक्रमणकारियों ने आक्रमण भी किये और उनमें से एक महमूद गज़नवी था, जिसने आक्रमण करके लूटमार की। महमूद गज़नवी के बाद मुहम्मद ग़ौरी आया। तरावड़ी का प्रसिद्ध युद्ध भी इस स्थान से दस मील की दूरी पर हुआ था। मुहम्मद ग़ौरी ने इस युद्ध में वीर पृथ्वीराज को बंदी बना लिया था। तैमूर ने अपने संस्मरणों में वर्णन किया है कि उसने इस स्थान को इसकी समृद्धि के कारण मलियामेट करने का पहले से ही निश्चय कर लिया था। १८वीं शताब्दी के प्रारम्भ से ही कुरुक्षेत्र युद्ध-क्षेत्र बन गया। दिल्ली के शासन के इच्छुक प्रत्येक व्यक्ति ने अपने भाग्य की परीक्षा की। सिख मिसलों का शासन स्थापित हो जाने के बाद भारत पर उत्तर-पश्चिम की ओर से आक्रमण समाप्त होने से परिस्थितियों में स्थिरता आ गई थी। वर्ष १७६५ के लगभग, अहमद शाह दुर्रानी पंजाब पर राज्य करने की इच्छा से निराश होकर काबुल वापिस लौट गया था।

सूर्यकुंड अमीन, थानेसर

पटियाला, नाभा, जीन्द, कैथल तथा लाडवा के सिख राजाओं ने सतलुज की ओर अपने राज्यों की स्थापना की। अपने राज्यों में इन्होंने साधुओं तथा तीर्थ-यात्रियों के लिए लंगर का प्रबन्ध किया तथा मन्दिरों और अन्य धर्म-स्थानों को भूमि और धन से सम्पन्न किया। महाराजा रणजीत सिंह ने यहाँ के मन्दिरों को सजाने के लिए उपहार भेंट किये। स्वतन्त्रता के बाद केवल प्रसिद्ध एवं भव्य गीता-मन्दिर (बिरला मन्दिर) का निर्माण हुआ है।

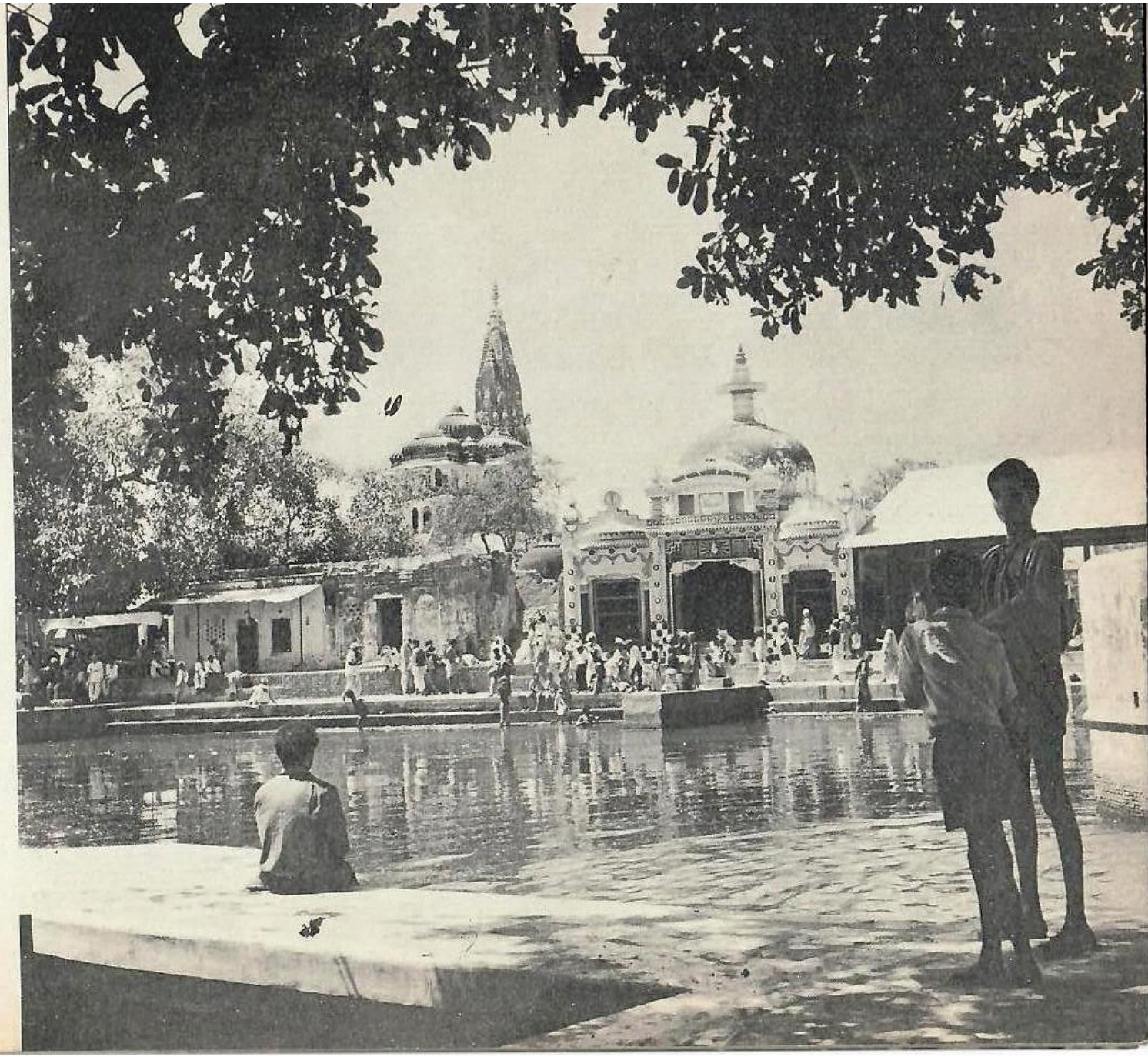

सन्निहित मन्दिर, थानेसर

सूर्य-ग्रहण मेला

सूर्य-ग्रहण तथा अन्य मेलों पर कुरुक्षेत्र में अपार धार्मिक उत्साह दिखाई देता है, जहाँ हिन्दू धर्म को मानने-वाले लाखों लोग इकट्ठे होते हैं। पाण्डव पुराण के अनुसार जो व्यक्ति कुरुक्षेत्र के सरोवरों में सूर्य-ग्रहण के समय स्नान करता है, उसे हजारों अश्वमेध यज्ञों का पुण्य फल प्राप्त होता है। सूर्य-ग्रहण के समय पुराने विचारों के लोग अपने पापों से मुक्ति तथा आत्मा की पवित्रता के लिए अनेक कष्टों को सहन कर के भी कुरुक्षेत्र के पवित्र सरोवरों में स्नान करने के लिए आते हैं। इसके अतिरिक्त, चन्द्र-ग्रहण, सोमवती अमावस्या, बावन द्वादशी, फल्गु तथा वैशाखी के समय कुरुक्षेत्र में प्रायः मेलों का प्रबन्ध किया जाता है जिसमें भारतवर्ष के सभी स्थानों से तीर्थ-यात्री बहुत बड़ी संख्या में शामिल होते हैं।

सूर्यग्रहण, कुरुक्षेत्र

पर्यटन-स्थल

१. ज्योतिसर

यह स्थान पुरातन इतिहास में वर्णित ३६५ तीर्थ-स्थानों में से एक है। यहाँ पर ही भगवान कृष्ण ने महाभारत युद्ध के दौरान गीता का दिव्य उपदेश दिया था।

२. सन्निहित सरोवर

यह कुरुक्षेत्र के दो पवित्रतम स्थानों में से एक है। इस सरोवर को सृष्टि का उत्पत्ति-स्थान कहा जाता है। इसकी पौराणिक कथा इस प्रकार है कि निराकार भगवान विष्णु उस स्थल पर समाधि लगाये हुये थे जबकि उनकी नाभि से कमल नाल स्फुटित हुआ। कमल से वेद मन्त्रोच्चारण करते हुये चतुरानन ब्रह्मा का आविर्भाव हुआ। ब्रह्मा के अवयवों से ही सृष्टि अस्तित्व में आई।

यह सरोवर ५०० गज़ लम्बे तथा १५० गज़ चौड़े चमकते पानी की छोटी-सी झील के समान दिखाई देता है। इसमें समीपवर्ती मन्दिरों के कलशों व शिखरों का प्रतिबिम्ब दिखाई देता है।

ज्योतिसर भगवद्गीता का जन्मस्थान

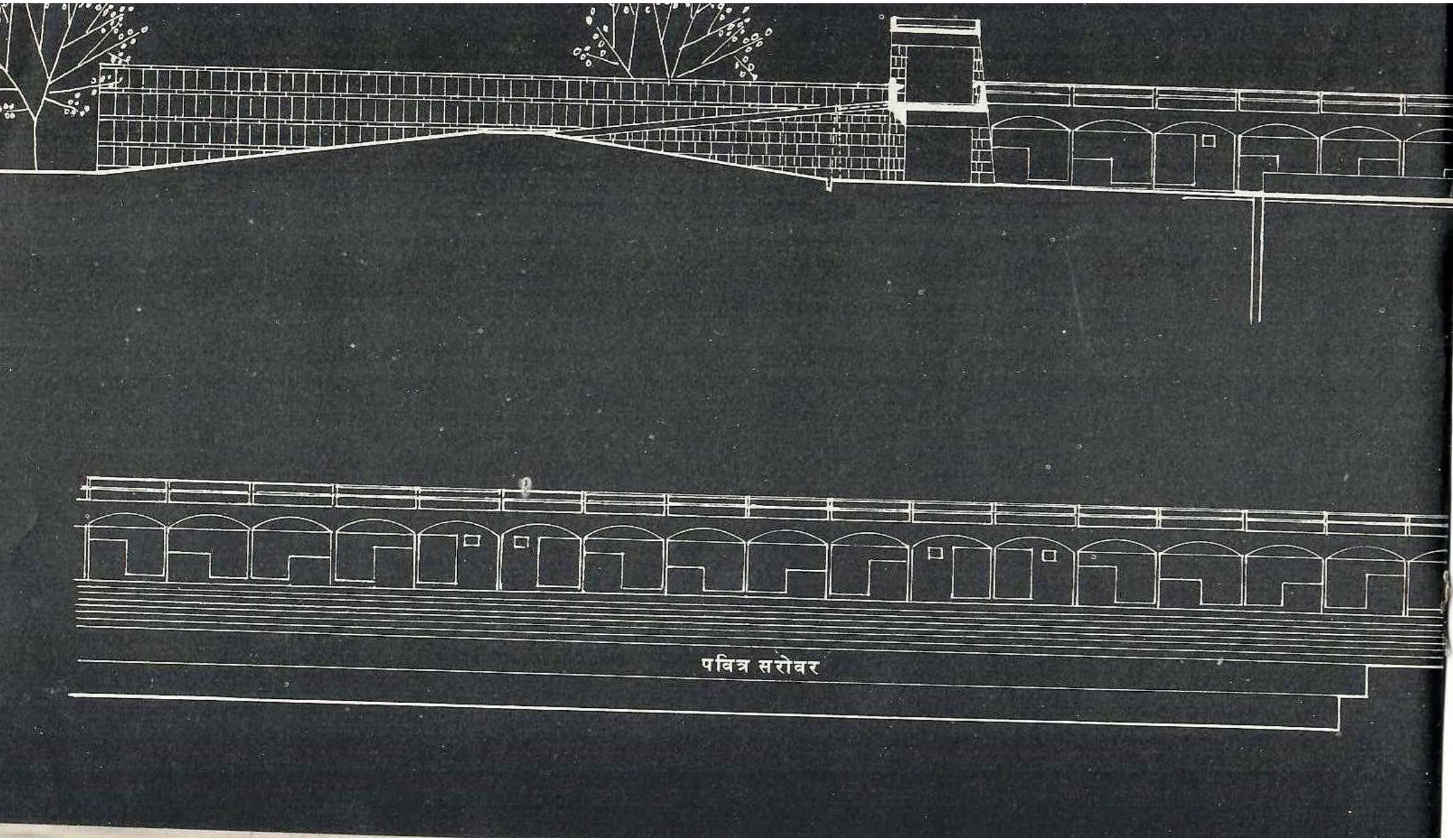

पवित्र सरोवर

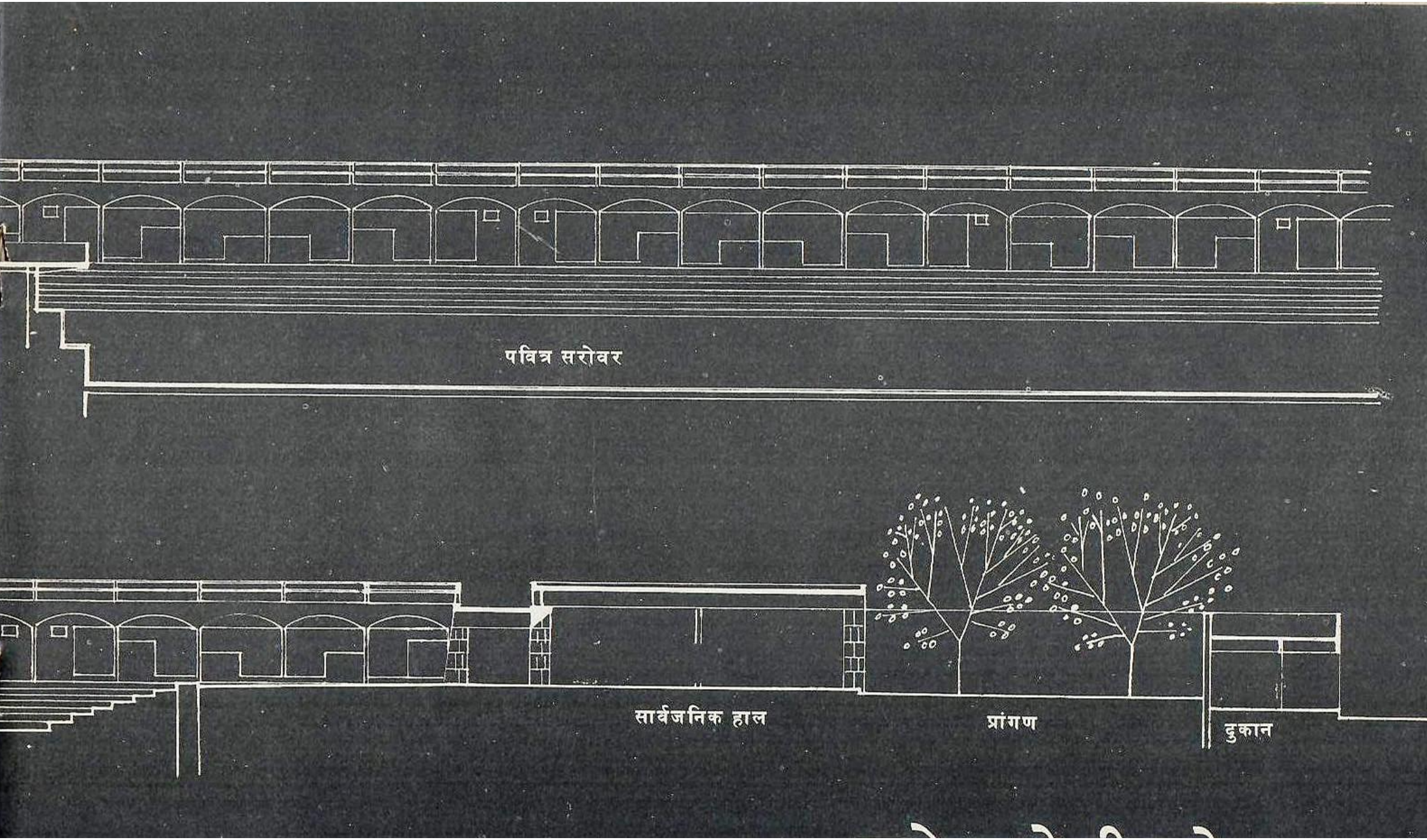
पवित्र सरोवर
सार्वजनिक हाल
प्रांगण
दुकान

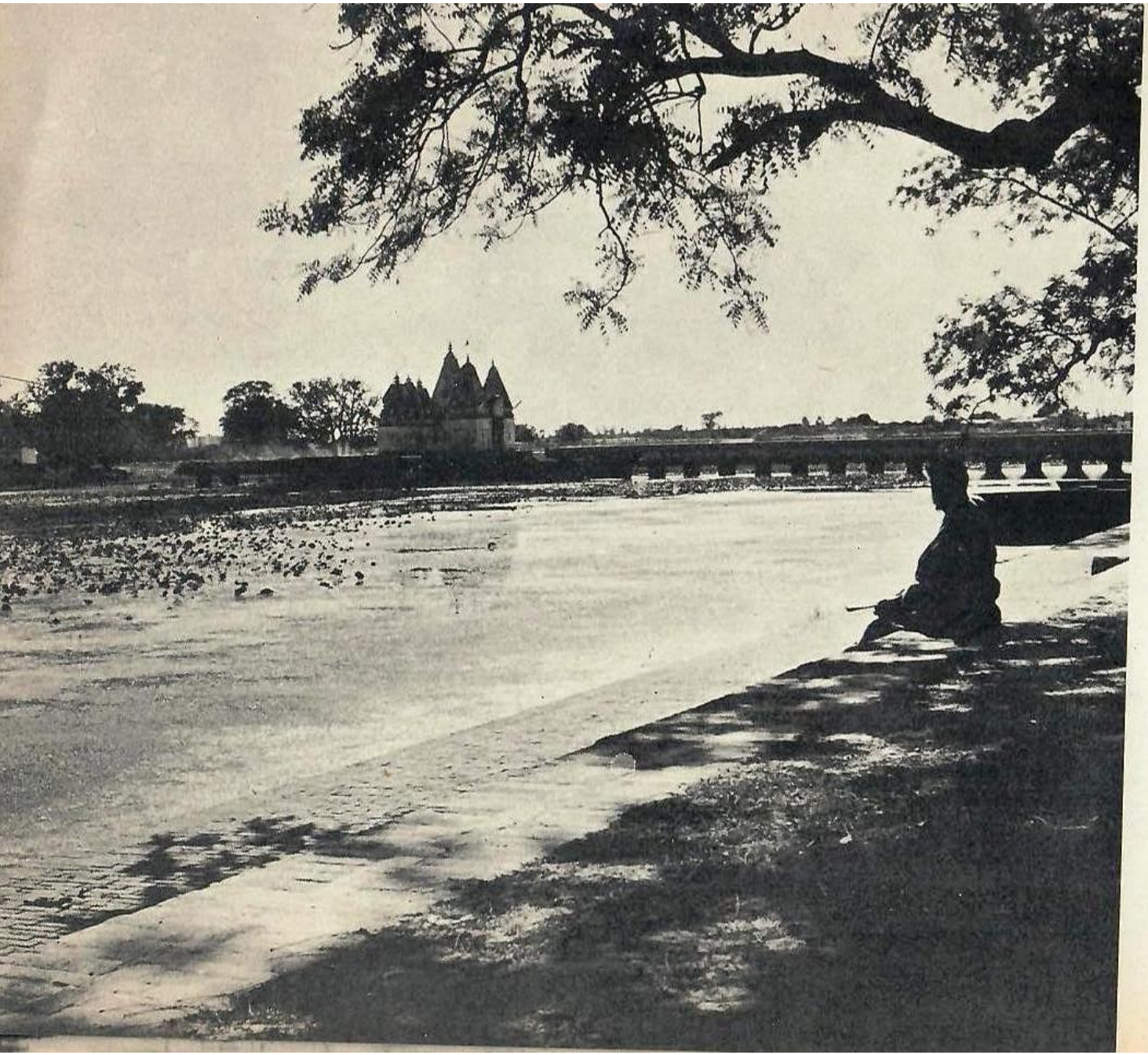

३. कुरुक्षेत्र सरोवर

सन्निहित सरोवर के अतिरिक्त यह कुरुक्षेत्र का पवित्रतम स्थान है। इस की लम्बाई ४००० फुट है। सूर्य-ग्रहण के समय लाखों लोग इसमें स्नान करते हैं। प्रातःकाल के समय इसका दृश्य बड़ा मोहक होता है, जब कमल के असंख्य फूल खुली पत्तियों से स्वागत करते हैं।

४. बाण गंगा

यह कुरुक्षेत्र से ३ मील दूर एक और पवित्र सरोवर है। कहते हैं कि भीष्म की प्यास शान्त करने के लिये अर्जुन ने पृथ्वी में तीर मारकर फव्वारा निकाला था। कहा जाता है कि यही फव्वारा बाद में सरोवर बन गया।

५. स्थानेश्वर

अर्थात् भगवान का स्थान, यह भी कुरुक्षेत्र का एक और पवित्र स्थान है। मन्दिर के नीचेवाला सरोवर किसी समय अपने जल के चिकित्सा-गुणों के कारण प्रसिद्ध था।

६. श्रवण नाथ मन्दिर

आकर्षण का एक और स्थान है जिसे महान सन्त श्रवण नाथ जी की स्मृति में बनाया गया था। सन्तजी ने ३ शताब्दी पूर्व तपस्या की थी।

कुरुक्षेत्र का सरोवर

७. नाभिकमल तीर्थ

यह उस विश्वास से संबंधित है कि ब्रह्मा का जन्म विष्णु की नाभि से उत्पन्न होनेवाले कमल से हुआ। लोग साधारणतया वहाँ श्रावण और चैत्र मास में जाते हैं।

८. चन्द्र कूप

यह एक पुरातन कुआँ है तथा पौराणिक कथा के अनुसार सूर्यग्रहण के समय इस कुयें का जल दूध बनकर बाहर छलक पड़ता था। इस चमत्कार पर क्रुद्ध होकर औरंगज़ेब ने कुयें को सिक्के से भर देने का आदेश दिया तथा वहाँ पर एक किला बनवा दिया। तदनन्तर मुगलों की शक्ति का ह्रास हो जाने पर किले को मलियामेट कर दिया गया और हिन्दुओं के लिए कुआँ फिर खोल दिया गया।

९. गीता भवन

१९२१–२२ में लाखों रुपये की लागत से बनाया गया। भवन में एक पुस्तकालय है जहाँ अन्य धार्मिक पुस्तकों के अतिरिक्त भगवद्गीता का सभी भाषाओं में अनुवाद भी है।

स्थानेश्वर के निकट बाण गंगा

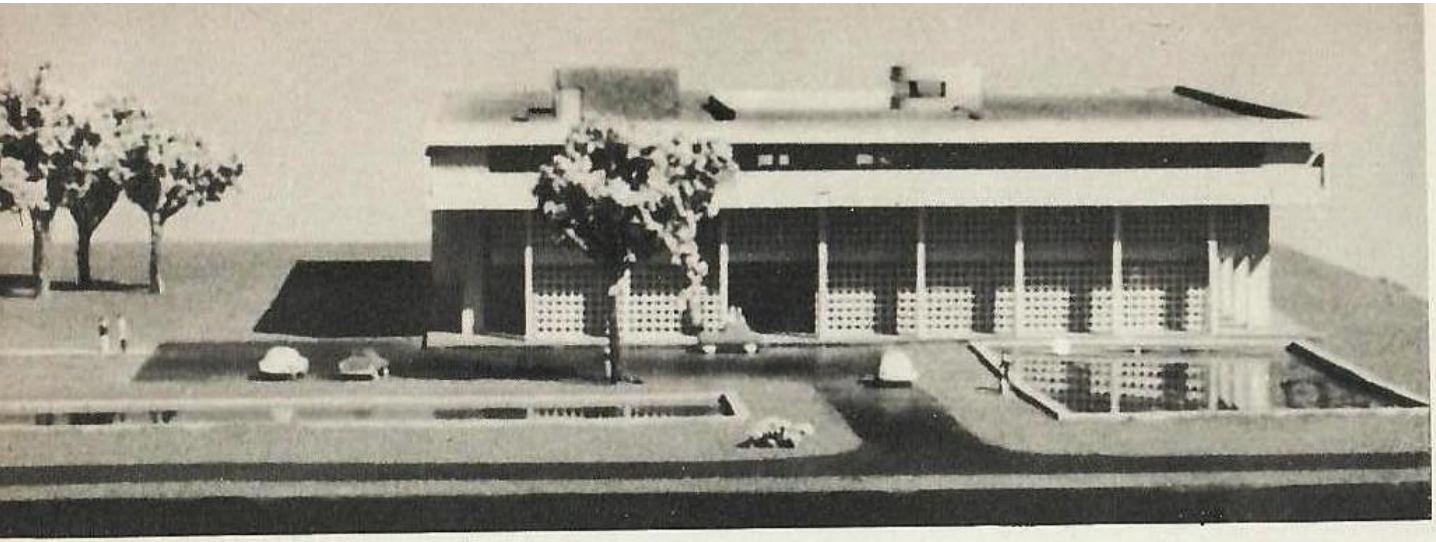

पुस्तकालय का मॉडल

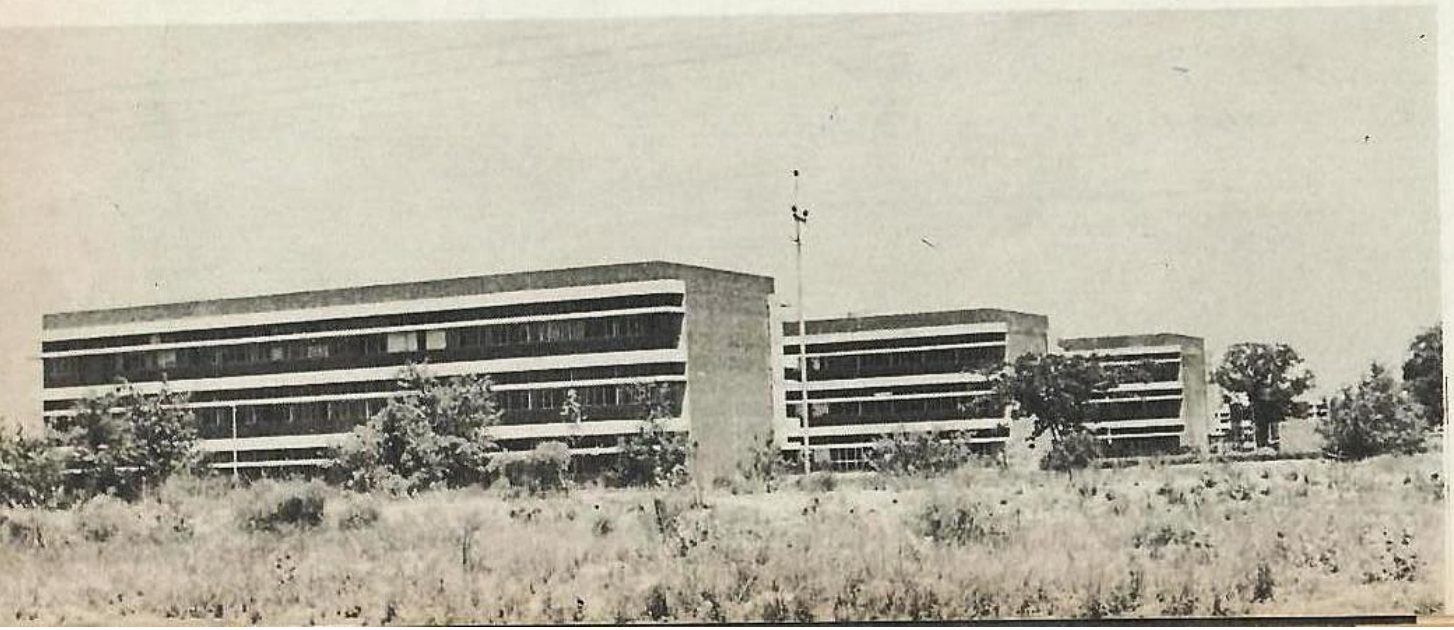

संकाय भवन

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, अपने क्षेत्र में विश्वविद्यालय चाहने वाले लोगों के चिर-स्वप्न का साकार रूप है। प्रधानतः हरियाणा राज्य हिन्दी भाषी है, जिसके अपने विशेष ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक रीति-रिवाज हैं। इस विश्वविद्यालय का उद्देश्य क्षेत्र की बौद्धिक तथा सांस्कृतिक आश्यकताओं को पूरा करने के साथ-साथ युवकों को उच्च शिक्षा देना भी है। चूँकि इस समय यह विश्व-विद्यालय कॉलेजों को सम्बद्ध करने वाला नहीं है, केवल रिहायशी है, इसलिए अभी इस क्षेत्र का कोई भी कॉलेज इस से सम्बद्ध नहीं है। फिर भी सारे राज्य पर इस का प्रभाव पड़ रहा है। इसका प्रभाव समय के साथ-साथ सारे क्षेत्र में बढ़ता जायेगा।

विश्वविद्यालय की स्थापना से भारतीय कला, संस्कृति व दर्शन के इस प्राचीन केन्द्र के पुनरुत्थान की ओर कदम उठाया गया है। इसमें सन्देह नहीं है कि बड़े शहरों में विश्वविद्यालय तो उपयोगी होते ही हैं परन्तु कुरुक्षेत्र जैसे ग्रामीण क्षेत्र में इसकी स्थापना बहुत महत्त्वपूर्ण है।

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में मानविकी शास्त्रों, सामाजिक व भौतिक विज्ञानों में १३ स्नातकोत्तर विभाग तथा असाधारण रूप से प्रतिभाशाली युवकों के लिए दो कॉलेज––कॉलेज ऑफ़ एजूकेशन तथा गवर्नमेंट कॉलेज–– हैं। इस विश्वविद्यालय ने सराहनीय प्रगति की है। यह विश्वविद्यालय प्राचीन भारतीय संस्कृति व संस्कृति के अध्ययन तथा अनुसधान पर विशेष बल देता है। इसमें हरियाणा संस्कृति के अध्ययन के लिए भी एक विभाग खोला गया है जिसने इस क्षेत्र के पुरातत्त्व अध्ययन में पर्याप्त प्रगति की है।

विद्या विहार गुरुकुल

यह वैदिक परम्परानुसार शिक्षा देने वाली प्रसिद्ध संस्था है। इसकी नींव ५५ वर्ष पूर्व स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा रखी गई थी।

क्षेत्रीय इंजीनियरी कालेज, कुरुक्षेत्र

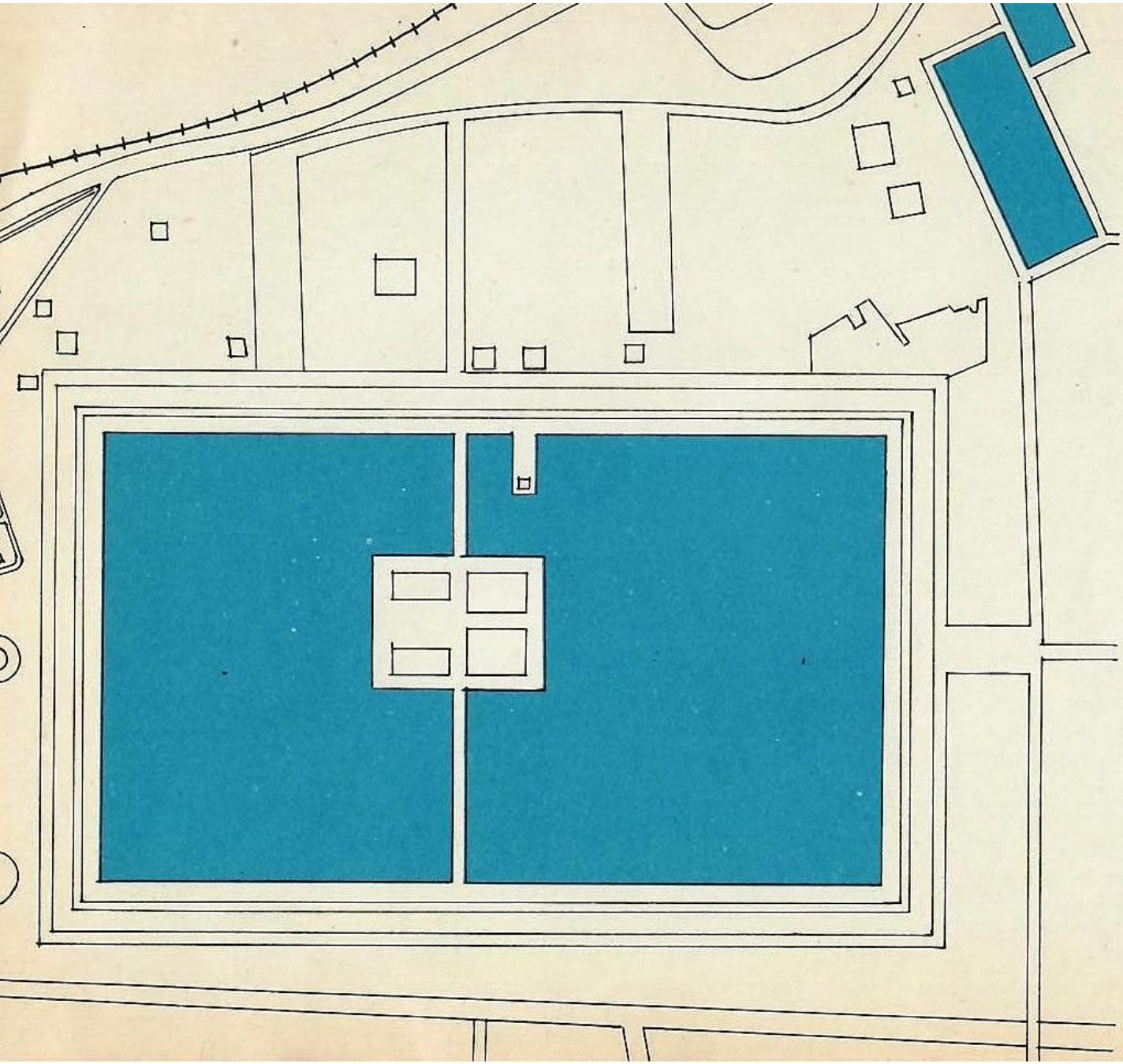

विकास बोर्ड

हरियाणा सरकार ने तदर्थ आधार पर कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड बनाया जिसके अध्यक्ष श्री गुजारी लाल नन्दा, केन्द्रीय रेल्वे मन्त्री तथा श्री बंसी लाल, मुख्य मन्त्री, इसके उपाध्यक्ष हैं। श्रीमती ओम् प्रभा जैन, वित्त मन्त्री, श्री खुर्शीद अहमद, स्वास्थ्य मन्त्री, श्री भगवत् दयाल शर्मा, संसद् सदस्य तथा सरकार के आठ प्रवर अधिकारी इसके सदस्य हैं। यह बोर्ड स्वायत्त संस्था है तथा इसका मुख्य काम क्षेत्र का विकास करना है।

बृहत्योजना (मास्टर प्लान)

बोर्ड ने बृहत् योजना तैयार करने का कार्य नगर आयोजकों, वास्तुविदों तथा इंजीनियरों के एक दल को सौंपा है। इस दल ने एक विस्तृत विकास योजना बनाई है, जिसमें इस क्षेत्र का नये सिरे से एक नक्शा बनाना भी शामिल है। इस नक्शे के अनुसार नई सड़कों की व्यवस्था, मन्दिरों तथा तालाबों के आस-पास की भूमि का प्रयोग, कुरुक्षेत्र तथा सन्निहित सरोवरों का नवीकरण, तीर्थ-यात्रियों के लिए धर्मशालाओं तथा जन-स्वास्थ्य की अन्य सुविधाओं के साथ स्नान-घाटों का निर्माण आदि किया जायेगा।

पवित्र सरोवर

कुरुक्षेत्र

तीर्थ-स्थान के रूप में विकास

१. ज्योतिसर
२. सन्निहित सरोवर
३. कुरुक्षेत्र सरोवर
४. बाण गंगा तीर्थ
५. स्थानेश्वर
६. नाभि तीर्थ
७. गीता भवन
८. कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय
९. इंजीनियरी कालेज
१०. थानेसर नगर

इस स्कीम की लागत लगभग ५ करोड़ रुपये होगी और इसे कार्यान्वित करने में कुछ वर्ष लगेंगे। इसलिए इस परियोजना के भिन्न-भिन्न भागों के लिये अलग-अलग अनुमान तैयार किए गए हैं और १९६८–६९ में हरियाणा सरकार द्वारा दिये गये १० लाख रुपये की रकम के साथ कुछ कार्य शुरू किया गया था। वर्ष १९६९-७० में १२ लाख रुपये की राशि दी गई है। आशा की जाती है कि निर्माण-कार्य के प्रगति करने पर हरियाणा सरकार द्वारा आगामी वर्षों में और भी अंशदान दिया जायेगा। कुरुक्षेत्र-सरोवर कार्यक्रमानुसार पुनर्निर्मित किया जा रहा है और कुछ ही महीनों में समस्त दक्षिणी भाग तैयार हो जायेगा। यह भी विचार है कि देश के इस पवित्रतम स्थान के पुनः निर्माण के लिए भारत सरकार एवं दूसरी राज्य सरकारों, अन्य संगठनों तथा विशिष्ट व्यक्तियों से दान देने के लिये निवेदन किया जाये।

बृहत्योजना

पर्यटकों के लिए सुविधाएँ

कुरुक्षेत्र का इस दृष्टि से भी विकास करने का विचार है कि पर्यटकों को इस ओर आकृष्ट किया जा सके, कारण यह है कि इस इलाके में पूर्णरूपेण ऐतिहासिक या पुरातत्त्व महत्त्व वाले अनेक स्थान हैं। यहां कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय होने के कारण ऐसे पर्यटकों के लिए भी आना आवश्यक हो गया है जिनकी धार्मिक या सांस्कृतिक रुचियों के अतिरिक्त दूसरी रुचियाँ भी हों। अतः पर्यटकों की सुविधा के लिए एक ऐसा पर्यटक-बंगला बनाने का विचार है जिसमें एक व्यक्ति के लिए, दो व्यक्तियों के लिए तथा अनेक व्यक्तियों के लिए रिहायशी सेट होंगे।

इसके अतिरिक्त शेख चिल्ली का मकबरा और दूसरे स्मारकों के आस-पास का क्षेत्र भी सुन्दर बनाया जायेगा।

कुरुक्षेत्र रेल और सड़क द्वारा सम्बद्ध है। करनाल, पिहोवा, अम्बाला, हरिद्वार और जगाधरी से नियमित रूप से बसें चलती हैं। दिल्ली से यह १६० किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। स्थानीय सरायों, धर्मशालाओं और सरकारी विश्राम-गृहों में स्थान आरक्षित कराया जा सकता है।

शेखचिल्ली का मकबरा, थानेसर

कुरुक्षेत्र-विकास परियोजना

अपील

कुरुक्षेत्र भारत के पवित्रतम प्रदेशों में से एक है। इतिहास के आरम्भ से लेकर भारतीय सभ्यता का जन्म तथा विकास कुरुक्षेत्र की भूमि में हुआ है। मुख्यतः सरस्वती घाटी के इस क्षेत्र ने ही प्राचीनतम संस्कृति को जन्म दिया। इसके निकट ही प्रसिद्ध सिन्धु-सरस्वती सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुये हैं। इस सभ्यता को हड़प्पा सभ्यता भी कहा जाता है। यहाँ वैदिक विचार और संस्कृति फली-फूली। बहुत से वेद-मन्त्रों का गान इसके निकटवर्ती क्षेत्रों में ही पहली बार किया गया था। बाद में यहाँ महाभारत का प्रसिद्ध युद्ध हुआ जिसके दौरान ही गीता का पवित्र उपदेश दिया गया।

प्रसिद्ध ज्योतिसर सरोवर अभी तक उस पवित्र उपदेश का स्मरण करवाता है जो ऐसे महत्त्वपूर्ण क्षणों में दिया गया था जबकि युद्ध क्षेत्र में दो शक्तिशाली सेनाएँ एक दूसरे के सामने डटी हुई थीं। सन्निहित सरोवर श्लाघ्य अतीत का स्मरण कराता है जबकि योद्धा दिन के समय तो एक दूसरे के साथ लड़ते-भिड़ते थे परन्तु रात को वही योद्धा इसके किनारों पर सौहार्द और शान्ति से आपस में गले मिलकर वार्त्तालाप और विचार-विमर्श करते थे। इसी तरह यहाँ कई मन्दिरों, तालाबों और सरोवरों के खंडहरों का पाया जाना कर्म और चिन्तन के महान् सन्देश का द्योतक है।

सांस्कृतिक समन्वय का प्रतीक

यह स्थान केवल उच्चतम भारतीय सांस्कृतिक परम्परा का ही परिचायक नहीं है बल्कि यह मुस्लिम और सिक्ख काल की मधुर स्मृतियों से भी सम्बद्ध है। शेखचिल्ली का मकबरा इस बात का संकेत देता है कि पवित्रता के क्षेत्र में हिन्दू और मुसलमान का भेद कोई अर्थ नहीं रखता था। अपनी यात्राओं में सिक्ख गुरुओं ने इस भूमि का भी भ्रमण किया। जहाँ श्री गुरु नानक देव जी ठहरे थे उस स्थान को 'सिद्धवटी' कहा जाता है। उसी प्रकार गुरु अमर दास जी, गुरु हर गोबिन्द जी, गुरु हरराय जी, गुरु तेग बहादुर जी और गुरु गोबिन्द सिंह जी के यात्रा-स्थलों पर भी गुरुद्वारे बनाये गये हैं जो कि सभी लोगों द्वारा पवित्र माने जाते हैं।

निर्मल सम्प्रदाय के प्रसिद्ध सन्त गुलाब सिंह जी ने अपना आश्रम यहाँ बनाया। आपने यहीं धर्म और दर्शन शास्त्र पर अपने अनेक ग्रन्थों की रचना की। इसके निकट ही भाई सन्तोख सिंह जी ने 'गुरु नानक प्रकाश' और 'गुरु प्रताप सूर्य' जैसे प्रसिद्ध ग्रन्थों की रचना की।

इस प्रकार कुरुक्षेत्र सहनशीलता, समन्वय और शान्ति की उस महान संस्कृति का प्रतीक है जिसका युगों से इस देश में विकास हुआ। यह भारत की धर्म-निरपेक्ष संस्कृति और हमारी राष्ट्रीय एकता के मूल्यों का महान एवं साकार स्मारक है।

शिक्षा परम्परा

कुरुक्षेत्र की साहित्यिक और शिक्षा-परम्परा महान है। बाण भट्ट और वामन पुराण की रचनाओं के पाठक इस स्थान की महान शिक्षा-परम्परा से भली-भांति परिचित हैं जिसका पुनरुज्जीवन कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के रूप में हुआ है। यह विश्वविद्यालय १९५६ में स्थापित किया गया था। इसकी स्थापना न केवल इस क्षेत्र के लोगों की शिक्षा की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बल्कि इसे प्राचीन भारतीय संस्कृति का अनुसंधान एवं अध्ययन-केन्द्र बनाने के लिए की गई थी। इस पवित्र भूमि ने देश के सभी भागों में से शताब्दियों से लाखों लोगों—युवकों, बूढ़ों, अमीरों और गरीबों—को अपनी ओर आकृष्ट किया है। भारत के आध्यात्मिक और सांस्कृतिक इतिहास के समुज्ज्वल नाम ऐसी घटनाओं से सम्बन्धित हैं जो भारत की समूची जनता के स्मृति-पटल पर अंकित हैं।

प्रतिदिन कुरुक्षेत्र के पवित्र सरोवर के चारों तरफ एकत्रित होने वाले पर्यटक और यात्री इस देश के प्रत्येक कोने और सभी क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करने वाली भारतीय सभ्यता की विविधता को प्रदर्शित करते हैं। प्रत्येक सूर्यग्रहण पर कुरुक्षेत्र के पवित्र सरोवर में तीर्थ-स्नान के लिये आने वाले लोगों की संख्या ५–६ लाख से भी बढ़ जाती है।

वर्षों से सरोवरों की मरम्मत नहीं हुई और इनकी दशा दयनीय है। लाखों लोगों की भक्ति और इस स्थान की परम्पराओं के सहज आकर्षण को ध्यान में रखते हुए इस स्थान की वर्तमान दशा और भी शोचनीय लगती है।

यह उचित ही है कि हरियाणा सरकार ने कुरुक्षेत्र के नवीकरण, सौन्दर्यवर्धन और खोए हुये गौरव की पुनः प्राप्ति के लिए योजना बनाई है। सारे भारतवर्ष, विशेषकर दक्षिणी भारत, से यात्री इस स्थान को देखने के लिए सारा साल आते रहते हैं। इन यात्रियों की सुविधा और हित के लिए कुरुक्षेत्र के विकास की वर्तमान परियोजना को आगे चलाना अत्यावश्यक है जिसमें गाद से भरे सरोवरों की सफाई करवाना, घाटों तथा नालियों का निर्माण, सड़कों तथा विश्राम-गृह और पार्क बनवाना, बगीचे लगाना एवं परिवहन, निवास-स्थान और सफाई-सुविधाओं का प्रबन्ध करना शामिल है।

यह सारे राष्ट्र की परियोजना है। जब यह पूरी हो जायेगी तो यह भारत के उस महान अतीत और समृद्ध आध्यात्मिक परम्परा के अनुकूल पाई जायेगी जो कि पवित्र सरोवरों और कुरुक्षेत्र के चारों तरफ के वातावरण में जीवित है। भारत के लोगों से अपील की जाती है कि वे इस पवित्र स्थल को दोबारा बनाने में आर्थिक सहायता करें ताकि नवीन कुरुक्षेत्र प्रति वर्ष यहाँ आने वाले और भक्ति भावना रखने वाले व्यक्तियों की धार्मिक जिज्ञासा को तृप्त कर सके।

गुलजारी लाल नन्दा

(गुलज़ारी लाल नन्दा)

अध्यक्ष,

कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड

टिप्पणी : इस पवित्र कार्य के लिए सभी दान, कार्यालय-सचिव, कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड, कुरुक्षेत्र (हरियाणा) को भेजे जायें जिसके द्वारा अपने पंजीकृत कार्यालय से पावती दी जायेगी।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि सम्बन्धी सामग्री और मन्दिरों के चित्र निदेशक, लोक सम्पर्क तथा पर्यटन विभाग, हरियाणा से प्राप्त हुए।

डीज़ाइन : श्री स. मुरुगेसन, वास्तुक।
रेखांकन (भीतरी आवरण) : श्री बलदेव रत्न।
कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड, कुरुक्षेत्र की ओर से थॉमसन प्रेस (इण्डिया) लिमिटेड, फ़रीदाबाद, हरियाणा द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।